

श्री शान्तिनाथ जिनपूजन

(कविवर वृन्दावनदासजी कृत)

(छन्द मत्तगयन्द)

या भव-कानन में चतुरानन, पाप पनानन घेरी हमेरी ।
आतम जानन मानन ठानन, बान न होन दर्ई शठ मेरी ॥
तामद भानन आपहि हो, यह छानन आन न आनन टेरी ।
आन गही शरनागत को अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

(छन्द त्रिभंगी)

हिमगिरि गतगंगा, धार अभंगा प्रासुक संग्गा भरि भृंगा ।
जर मदन मृतंगा, नाशि अघंगा, पूजि पदंगा मृदुहिंगा ॥
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाथ जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर बावन चंदन, कदली नंदन, घन आनंदन सहित घसों ।
भवतापनिकंदन, ऐरानन्दन, वंदि अमंदन, चरन वसों ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाथ चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हिमकर करी लज्जत, मलय सुसज्जत, अच्छत जज्जत भरि थारी ।
दुखदारिद गज्जत, सदपद सज्जत, भवभय भज्जत अतिभारी ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मन्दार सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं मलयभरं ।
भरि कंचनथारी, तुम ढिग धारी, मदनविदारी, धीर धरं ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान नवीने पावन कीने, षट्स भीने सुखदाई ।

मनमोदन हारे, क्षुधा विदारे, आगैं धारे गुन गाई ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रम तम नाशे, ज्ञेयविकाशे सुखरासे ।

दीपक उजियारा यातैं धारा, मोह निवारा, निज भासे ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन करपूरं, करि वर चूरं, पावक भूरं, माहिं जुरं ।

तसु धूम उड़ावै, नाचत जावै, अलि गुंजावै, मधुर स्वरं ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम खजूरं, दाडिम पूरं, निम्बुक भूरं लै आयो ।

तासों पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निजरस रज्जो उमगायो ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी ।

तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरनारी ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक

(छन्द सुन्दरी तथा द्रुतविलम्बित)

असित सातें भादव जानिये, गरभ मंगल तादिन मानिये ।

शचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥

ॐ ह्रीं श्री भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनम जेठ चतुर्दशी श्याम हैं, सकल इन्द्रसु आगत धाम हैं ।

गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हौं अबै ॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।

भ्रमर चौदस जेठ सुहावनी, धरम हेत जजों गुन पावनी॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पौष दशैं सुखरास है, परम केवलज्ञान प्रकाश है।

भवसमुद्र-उधारन देव की, हम करें नित मंगल सेवकी॥

ॐ ह्रीं श्री पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

असित चौदशि जेठ हनें अरी, गिरी समेद थकी शिवतिय वरी।

सकल इन्द्र जजैं तित आयकैं, हम जजैं इत मस्तक नायकैं॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द-रथोद्धता, चंद्रवत्स तथा चंद्रवर्त्म)

शान्ति शान्तिगुन मंडिते सदा, जाहि ध्यावते सुपंडिते सदा।

मैं तिन्हें भगति मंडिते सदा, पूजिहों कलुष हंडिते सदा॥

मोच्छ हेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुण रत्नमाल हो।

मैं अबै सुगुनदाम ही धरों, ध्यावतें तुरित मुक्ति-ती-वरो॥

(पद्दरि)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज, भवसागर में अद्भुत जहाज।

तुम तजि सरवारथसिद्ध थान, सरवारथजुत गजपुर महान॥

तित जन्म लियौ आनंद धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार।

इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान, तुमको कर में ले हरष मान॥

हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार।

गिरिराज जाय तित शिला पाँडु, तापै थाप्यो अभिषेक माँडु॥

तित पंचम उदधितनों सुवार, सुर कर कर करि ल्याये उदार।

तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द, तुम सिर धारा ढार्यो सुनन्द॥

अघघघ घघघघ धुनि होत घोर, भभभभ भभ धध धध कलश शोर ।
 दृम दृम दृमदृम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नूपुरंग ॥
 तन नन नन नन तनन तान, घन नन नन घंटा करत ध्वान ।
 ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल, जुत नाचत नावत तुमहिं भाल ॥
 चट चट चट अटपट नटत नाट, झट झट झट झट नट शट विराट ।
 इमि नाचत राचत भगत रंग, सुर लेत जहाँ आनंद संग ॥
 इत्यादि अतुल मंगल सुठाट, तित बन्यो जहाँ सुरगिरि विराट ।
 पुनि करि नियोग पितुसदन आय, हरि सौंध्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥
 पुनि राजमाहिं लहिं चक्ररत्न, भोग्यौ छखंड करि धरम जत्न ।
 पुनि तप धरि केवलरिद्धि पाय, भविजीवन को शिवमग बताय ॥
 शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुणमण्डित अतुल अनंत भेष ।
 मैं ध्यावतु हौं निज शीश नाय, हमरी भवबाधा हरि जिनाय ॥
 सेवक अपनो निज जान जान, करुना करि भौभय भान भान ।
 यह विघन मूल तरु खण्ड खण्ड, चितचिन्तत आनन्द मंड मंड ॥

(छन्द घत्तानन्द)

श्री शान्ति महंता शिवतिय कंता, सुगुन अनन्ता भगवन्ता ।
 भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनन्ता, दातारं तारनवन्ता ॥
 ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(छन्द रूपक)

शान्तिनाथ जिनके पद पंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय ।
 जनम-जनम के पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय ॥
 मन-वाँछित सुख, पावे सो नर बाँचै भगतिभाव अतिलाय ।
 तातैं 'वृन्दावन' नित बन्दै, जातैं शिवपुर राज कराय ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)